पेड़ का पता

समीक्षा : प्रभात

पेड़ का पता किताब के लेखक सुशील शुक्ल जब यह लिखते हैं कि—"पृथ्वी पर एक पेड़ मेरा पता है" तो इसके मायने यही हैं कि पेड़ का पता पृथ्वी पर हम इन्सानों का पता भी है। जिस दिन पृथ्वी से पेड़ का पता ग़ायब हो जाएगा, हम इन्सानों का पता भी ग़ायब हो जाएगा।

महज़ छब्बीस पेज की इस पतली-सी किताब में गद्य के उन्नीस छोटे-छोटे टुकड़े हैं। इक्कीस साँस में पूरी किताब पढ़ी जा सकती है। गद्य के इन टुकड़ों पर तारीख़ें भी लिखी होतीं तो हम इस किताब को एक लेखक की डायरी भी कह सकते थे, क्योंकि इनमें गहरा आत्मसंवाद और निजता है। एक इन्सान अपने आस-पास को कैसे देखता है, कैसे महसूस करता है। देखते और महसूस करते हुए क्या सोचता है, यही सब इनमें लिखा है। पढ़ते हुए किसी के भी मन में ऐसी इच्छा जाग सकती है कि—काश! मैं भी ऐसे लिखा करूँ।

लेखक : सुशील शुक्ल

चित्र : तापोषी घोषाल

पृष्ठ संख्या : 26

भाषा : हिन्दी

प्रकाशक : जुगनू प्रकाशन

किताब में हरेक गद्य के टुकड़े का एक नाम है—वो तीन पेड़, बादलों से पानी मिला तो..., नेम प्लेट, कराची का चौसा, गाय की डायरी, एक भूत की डायरी, अकेला जूता, मैं पृथ्वी को गले लगाना चाहता हूँ, आदि-आदि। ये नाम ही अपने-आप में ऐसे हैं कि कोई शिक्षक चाहें तो अपनी कक्षा में हरेक बच्चे को एक-एक नाम की पर्ची दे सकते हैं, और कह सकते हैं कि इस नाम को पढ़ो और इसे पढ़कर जो तुम्हारे मन में आता है उसे एक-दो पैराग्राफ़ में लिखो। फिर हरेक बच्चे ने जो-जो लिखा उसे कक्षा के सारे बच्चे सुन सकते हैं। उसके बाद लेखक ने क्या लिखा है, उसे पढ़कर देख सकते हैं। ऐसा करना कक्षा में कमाल कर सकता है।

ये एक ऐसे इन्सान के लिखे गद्य के टुकड़े हैं जो क़ुदरत को देखकर विस्मय से भर जाता है। इन्हें पढ़ते हुए हम सुशील शुक्ल को विस्मित होते हुए देख सकते हैं, और ऐसी विस्मयजनक भाषा रचते हुए देख सकते हैं जो गद्य और कविता के अलगावों के पार चली गई है।

"जहाँ वो फ़र्नीचर की बड़ी दुकान है, वहीं तीन पेड़ थे। दो इमलियाँ और एक नीम।" वे एक दिन इस चार मंज़िला दुकान में दो मंज़िल तक चढ़ते हैं, इमली के पेड़ पर चढ़ने की तरह। दुकान से निकलने के बाद सोचते हैं—"मैं हरा सूरज बनाता हूँ तो टीचर डाँटते हैं। अजीब बात है कोई पेड़ से फ़र्नीचर की दुकान बनाता है तो उसे कोई नहीं डाँटता।"

फ़र्नीचर की दुकान तीन खोए हुए पेड़ों का पता है। जंगलों को काटा जा रहा है, इसके मायने ये भी हैं कि उनमें रहने वाले आदिवासियों को..., पृथ्वी से ग़ायब किया जा रहा है। एक ओर हम समतापूर्ण समाज रचने का सपना देखते हैं जहाँ सबको जीने का समान अधिकार है, दूसरी ओर कुछ लोगों के लालच का पेट भरता ही नहीं है, चाहे इसके लिए पेड़ों, जंगलों, लोगों को ही क्यों न ग़ायब करना पड़े।

कराची का चौसा, सेठ और उसका आदमी, नेम प्लेट, आदि गद्य के ऐसे टुकड़े हैं जिनसे उठने वाले सवालों पर कक्षा में विचार-विमर्श किया जा सकता है। दो देशों के बीच के मानवीय पहलू, ग़ैर-बराबरी, पलायन की त्रासदी, आदि मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है।

बच्चों के साहित्य के इलाक़े में सुशील शुक्ल कल्पनाशीलता के जादूगर हैं। उनकी कल्पनाशीलता से न भाषा बच पाती है न जीवन। भाषा उन्हें जितना देती है, भाषा को अपनी कल्पनाशीलता से सृजित कर वे उतना ही भाषा को वापस लौटा देते हैं। जीवन उन्हें जितना दिखाता है, अपनी कल्पनाशीलता से वे जीवन को ऐसा दिखा देते हैं कि जीवन फिर से ख़ुद को देखने पर विवश हो जाए—"जब पेड़ पर फूल आते तो पेड़ की परछाई को भी फूल आते। जब पेड़ को फल आते तो पेड़ की परछाई को भी फल आते। पतझड़ में पत्ते झरते तो उनके साथ उनकी परछाई भी झर जाती।"

सुशील शुक्ल ने कल्पनाओं का ऐसा उत्खनन किया है कि उनकी कुछ कल्पनाओं की मार्मिकता हिला देती है। एक गिरा दिए घर की 'नेम प्लेट' देखकर वे लिखते हैं–"नहीं गिराया जाता तो कम-से-कम पच्चीस साल तो बना ही रहता।" ऐसे में यह लिखना कि–"नेम प्लेट पर एक नाम लिखा है। रहते तो उसमें ज़्यादा लोग होंगे।"

हम आज जिस पंखे के नीचे हवा खाते बैठे या लेटे हैं। सुशील पूछते हैं–"कौन चला रहा है यह पंखा?" और जवाब की तलाश में वे खदान में काम कर रहे उन कामगारों तक पहुँच जाते हैं जो कोयला निकाल रहे हैं, बिजली बना रहे हैं।

एक इन्सान जो हवा में हाथ लहराते हुए ख़ाली स्थान से लिपटता है। सुशील कहते हैं–"वहाँ एक पेड़ होता था। आज भी होता तो कौन उसे पागल कहता।"

किताब में तापोषी घोषाल के चित्र भी इतने ही अनूठे हैं। शब्द के लिए लिखे को चित्र के लिए लिखा भी समझा जाए।

प्रभात शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य रहे हैं। आपके दो कविता संग्रह *अपनों में नहीं रह पाने का गीत* साहित्य अकादमी से व *जीवन के दिन* राजकमल से प्रकाशित है। बच्चों के लिए कविता, कहानियों की कई किताबें प्रकाशित। साहित्य सृजन में उल्लेखनीय योगदान के लिए आपको युवा कविता समय सम्मान, 2012, सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार 2010 और बिग लिटिल बुक अवार्ड 2019 प्रदान किया गया है।

जय भीम

समीक्षा : दिनेश मडगाँवकर

जय भीम बच्चों के लिए एक अनूठी पुस्तक है। डॉ बी आर अम्बेडकर को सुपरहीरो के रूप में चित्रित करने वाली यह पहली पुस्तक है, जो कहानी को पारम्परिक रूप से कहने की शैली के बजाय एक नए ढंग से प्रस्तुत करती है। यह बच्चों के लिए लिखी गई शृंखला के अन्तर्गत आती है, जो छोटी होने के बावजूद बहुत प्रभावशाली है। यह संवैधानिक मूल्यों को वीरता और न्याय के लेंस के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए एक जीवन्त कथा शैली का उपयोग करती है।

लेखक, विकास आर मौर्य, कहानी कहने में एक विशिष्ट प्रकार का प्रयोग करते हैं। वे रचनात्मकता और साहस के साथ, अम्बेडकर को पाठ्यपुस्तकों तक सीमित एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक सजीव, साँस लेने वाले ऐसे सुपरहीरो के रूप में देखते हैं जो नीले रंग के कपड़े पहने, क़लम से लैस, कमज़ोरों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार है। यह अवधारणा बच्चों को बहुत अच्छी लगती है क्योंकि वे सुपरमैन और स्पाइडरमैन जैसे प्रसिद्ध हीरो से काफ़ी प्रभावित रहते हैं। पुस्तक की यही बात उन्हें अम्बेडकर की ओर आकर्षित करती है, और वास्तविक जीवन के एक ऐसे व्यक्ति से परिचित कराती है जिनका राष्ट्रीय महत्त्व बहुत अधिक है।

कहानी संविधान की प्रस्तावना से लिए गए वाक्यांश 'हम, भारत के लोग' के साथ शुरू होती है, और पूरी पुस्तक में एक ऐसा नारा बन जाती है जो कहानी को न्याय और समानता की संवैधानिक भावना से जोड़ता है।

लेखक : विकास आर मौर्य

चित्रांकन : सुरेश आर अर्कसाली

आयु वर्ग : 6-12 वर्ष

पृष्ठ संख्या : 20

भाषा : कन्नड़

प्रकाशक : नवकर्नाटक प्रकाशन, बेंगलूरु

सुरेश आर अर्कसाली द्वारा बनाए गए चित्र बेहद शानदार हैं, और कहानी को जीवन्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये देखने में तो आकर्षक हैं ही, भावनात्मक रूप से भी बहुत प्रभावित करते हैं। दिए गए हर दृश्य की भावना, ताक़त और प्रतीकात्मकता को चित्र बहुत अच्छे से दर्शाते हैं। चित्रों में नीले रंग की प्रमुखता है। यह रंग अम्बेडकर को एक महान नायक के रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ न्याय के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है। कहीं-कहीं लाल और भूरे रंग का इस्तेमाल है। इनका इस्तेमाल समाज की नकारात्मक शक्तियों द्वारा उत्पन्न उथल-पुथल और संघर्षों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने के लिए किया गया है। इनसे घटनाओं में गहराई और भावनात्मकता जुड़ जाती है। रंगों का यह चयन कहानी के कुल प्रभाव को मज़बूत करता है, और उठाए जा रहे मुद्दों के तक़ाज़े को व्यक्त करने में मदद करता है–चाहे वह असमानता हो, शोषण या प्रतिरोध हो।

चित्र कहानी का साथ ही नहीं देते, बल्कि इसे विस्तार भी देते हैं। वे कहानी को शक्तिशाली बिम्बों के साथ चित्रित करते हैं जो जटिल सामाजिक वास्तविकताओं को इस तरह से व्यक्त करती हैं कि बच्चे इसे तुरन्त समझ सकें। फिर चाहे वह चित्रण अम्बेडकर द्वारा संविधान की सहायता से बच्चों की रक्षा करना हो, या अन्याय का सामना करना, हर चित्रण सशक्तिकरण और न्याय के मूल सन्देश को पुष्ट करता है।

पूरी कथा प्रतीकात्मक विवरणों से समृद्ध है। जैसे–एक निजी स्कूल ग़रीब परिवारों के बच्चों को प्रवेश देने से इन्कार कर देता है, जब तक कि सुपरहीरो उनके शिक्षा के अधिकार की रक्षा करने के लिए नहीं आ जाता। एक अन्य एपिसोड में, वह एक अमीर बिल्डर द्वारा चलाए जा रहे बुलडोज़र को रोकता है, और एक जलते हुए गोदाम से बाल मज़दूरों को बचाता है। ऐसा करते हुए वह उन लोगों को नैतिकता का पाठ पढ़ाता है जो शक्तिहीनों का शोषण करते हैं। उसकी आवाज़ में दृढ़ता और स्पष्टता के साथ यह वाक्य गूँजता है, "ग़रीबों के बच्चे आपके घर की सम्पत्ति नहीं हैं।" और उसका यह वाक्य लम्बे समय से चले आ रहे अन्याय और विशेषाधिकार को चुनौती देता है।

कहानी में आगे एक धनी, अभिमानी व्यक्ति अपने पौराणिक 'माया घोड़े' पर सवार होकर मज़ाक़ उड़ाते हुए कहता है, "अगर तुम्हारे जैसे सौ लोग भी पैदा हो जाएँ तो मैं उन्हें भी अपने दिमाग़ की प्रतिभा से मात दे दूँगा।" इस अहंकार का सामना भी एकजुट नारे से होता है, 'हम, भारत के लोग!' अभिमानी व्यक्ति बड़ी उग्रता से इसका प्रतिकार करता है। बच्चे और बड़े, सभी डर के मारे पीछे हट जाते हैं, लेकिन फिर उन्हें पता चलता है कि वे तो अम्बेडकर और उनके साथियों द्वारा उठाई हुई एक अदृश्य ढाल से सुरक्षित हैं। और वह ढाल है 'संविधान', और इस पूरी अराजकता के ऊपर 'जय भीम' का नारा गूँज रहा है।

इस मार्मिक और प्रतीकात्मक कहानी में लेखक एक शक्तिशाली सत्य को व्यक्त करने में सफल होते हैं : "संविधान केवल एक क़ानूनी दस्तावेज़ नहीं है; यह एक जीवन्त शक्ति है जो लोगों, विशेष रूप से उत्पीड़ितों, की सहायता के लिए उनके साथ खड़ी है।" रोमांचकारी दृश्यों और जीवन्त पात्रों के माध्यम से, वह बच्चों में न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान पैदा करते हैं।

बच्चों के लिए ऐसी पुस्तकें कम ही हैं जो संविधान के महत्त्व और अम्बेडकर के दृष्टिकोण को इतने प्रभावी ढंग से व्यक्त कर पाई हैं। *जय भीम* एक ऐसी पुस्तक है जिसे हर माता-पिता को अपने बच्चों के साथ पढ़ना चाहिए, न केवल कहानी की दृष्टि से, बल्कि साहस, संवेदना और संवैधानिक जागरूकता के उस सन्देश के लिए भी जो इसमें दिया गया है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

दिनेश मडगाँवकर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के कम्युनिकेशन विभाग में कन्नड़ इनिशिएटिव टीम के सदस्य हैं। उन्होंने एक लघु कहानी संग्रह लिखा है, और बच्चों की पुस्तकों का कन्नड़ में अनुवाद किया है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषा के कॉपीराइटर के रूप में भी काम किया है।